



## 315345 - सूरतुल-फातिहा के अवतरित होने का समय

### प्रश्न

सूरतुल-फातिहा का अवतरण कब हुआ? क्या यह अल्लाह तआला के दुनिया वालों पर नमाज़ फर्ज करने के बाद अवतरित हुई या उससे पहले? मुझे सिर्फ निर्धारण चाहिए।

### विस्तृत उत्तर

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान केवल अल्लाह तआला के लिए योग्य है।

सर्व प्रथम :

अधिकतर विद्वानों के दृष्टिकोण के अनुसार, सूरतुल-फातिहा मक्की सूरतों में से है। विद्वानों ने इसके मक्की होने पर कई चीजों को प्रमाण बनाया है, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं :

1- इस कथन पर बहुत-से सही प्रमाण एकत्रित हैं, उन्हीं में से अल्लाह सर्वशक्तिमान का यह फरमान है :

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ [الحجر: 87].

“निःसंदेह हमने आपको बार-बार दोहराई जाने वाली सात आयतें और महान कुरआन प्रदान किया है।” (सूरतुल-हिज्र : 87) और यह सूरतुल-हिज्र की एक आयत है, जो सर्वसम्मति से एक मक्की सूरत है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सात बार-बार पढ़ी जाने वाली आयतों की व्याख्या सूरतुल-फातिहा से की है। तो इससे यह आवश्यक हो जाता है कि सूरतुल-फातिहा मक्का में अवतरित हुई।

2- नमाज़ मक्का में फर्ज (अनिवार्य) हुई और उसके बिना नमाज़ सही (मान्य) नहीं होती है।

बल्कि कुछ विद्वान इस बात की ओर गए हैं कि सूरतुल-फातिहा सबसे पहले उतरने वाली चीज़ (सूरत) है। लेकिन यह बात कमज़ोर है।

इब्ने तैमिय्यह ने कहा : “बिना किसी संदेह के फातिहतुल-किताब (सूरतुल-फातिहा) मक्का में अवतरित हुई ...

और जिन लोगों ने यह कहा है कि : सूरतुल-फातिहा मदीना में अवतरित हुई थी : उनकी बात निश्चित रूप से गलत है।”



“मजमूउल-फतावा” (17 / 190-1991) से उद्धरण समाप्त हुआ।

सूरतुल-फातिहा के मक्की होने को अनुसंधानकर्ता विद्वानों के एक समूह ने राजेह करार दिया है, जैसे कि इब्ने तैमिय्यह, इब्ने कसीर, इब्ने हजर, अल-बैजावी, अल-कवाशी और अन्य।

देखें : अब्दुर-रज़्ज़ाक हुसैन की पुस्तक “अल-मक्की वल-मदनी” (1 / 446-468)।

दूसरी बात :

अल्लामा “कुर्तुबी” ने “अल-जामिओ लि-अहकामिल कुरआन” (1/115) में कहते हैं : “इस बात में कोई मतभेद नहीं है कि नमाज़ मक्का में फर्ज की गई थी। और यह बात कहीं भी संरक्षित नहीं है कि इस्लाम में कभी कोई नमाज़ “अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन” के बिना भी थी। इसका प्रमाण नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान है : “सूरतुल-फ़ातिहा के बिना कोई नमाज़ नहीं है।” और यह हुक्म के बारे में बताया गया है, न कि शुरुआत के बारे में, और अल्लाह ही बेहतर जानता है।” उद्धरण समाप्त हुआ।

और अल्लाह तआला ही सबसे अधिक ज्ञान रखता है।